

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES



ISSN 2277 – 9809 (online)

ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

सामाजिक सुधार : राजा राम मोहन राय का राजनीतिक दृष्टिकोण

डॉ. बृजेश स्वरूप सोनकर,

असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग,
कर्म क्षेत्र महाविद्यालय, इटावा।

सारांश (Summary)

प्रस्तुत शोध "सामाजिक सुधार : राजा राम मोहन राय का राजनीतिक दृष्टिकोण" भारतीय पुनर्जागरण के प्रमुख विचारक और समाज सुधारक राजा राम मोहन राय के सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन का अध्ययन है। उन्नीसवीं शताब्दी के भारतीय समाज में अनेक सामाजिक कुरीतियाँ, धार्मिक रूढ़ियाँ और असमानताएँ विद्यमान थीं, जिनके कारण समाज के समग्र विकास में बाधा उत्पन्न हो रही थी। ऐसे समय में राजा राम मोहन राय ने सामाजिक सुधारों के माध्यम से भारतीय समाज में नवीन चेतना और आधुनिक विचारधारा का विकास किया। उन्होंने सती प्रथा के उन्मूलन, महिला शिक्षा, धार्मिक सहिष्णुता, सामाजिक समानता तथा मानवाधिकारों के पक्ष में प्रभावशाली विचार प्रस्तुत किए। इस शोध का मुख्य उद्देश्य राजा राम मोहन राय के सामाजिक सुधार संबंधी विचारों का अध्ययन करना तथा उनके राजनीतिक दृष्टिकोण का विश्लेषण करना है। अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि उन्होंने सामाजिक सुधार को केवल समाज तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे राजनीतिक अधिकारों, नागरिक स्वतंत्रता, प्रेस की स्वतंत्रता और उत्तरदायी शासन व्यवस्था से भी जोड़ा। उनका चिंतन आधुनिक भारतीय लोकतंत्र और संवैधानिक मूल्यों की आधारशिला के रूप में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि राजा राम मोहन राय के विचार भारतीय समाज में आधुनिक चेतना और सामाजिक परिवर्तन के महत्वपूर्ण आधार बने। महिला अधिकार, धार्मिक स्वतंत्रता और सामाजिक समानता के प्रति उनका दृष्टिकोण वर्तमान भारतीय समाज और राजनीति में भी अत्यंत प्रासंगिक है। इस प्रकार उनका राजनीतिक चिंतन भारतीय लोकतांत्रिक मूल्यों और सामाजिक सुधार आंदोलनों के लिए आज भी प्रेरणादायक और मार्गदर्शक सिद्ध होता है।

मुख्य शब्द (Keywords) : सामाजिक सुधार, राजनीतिक दृष्टिकोण, भारतीय पुनर्जागरण, महिला अधिकार, सती प्रथा, धार्मिक सहिष्णुता, सामाजिक समानता, नागरिक स्वतंत्रता, भारतीय राजनीतिक चिंतन।

प्रस्तावना (Introduction)

19वीं शताब्दी का भारत सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक दृष्टि से गहरे परिवर्तन तथा संक्रमण के दौर से गुजर रहा था। यह वह काल था जब भारतीय समाज एक ओर परंपरागत रूढ़ियों और अंधविश्वासों से जकड़ा हुआ था, वहीं दूसरी ओर पश्चिमी शिक्षा, आधुनिक विचारों और औपनिवेशिक शासन के प्रभाव से एक नई चेतना भी विकसित हो रही थी। ब्रिटिश शासन के कारण प्रशासनिक संरचना में परिवर्तन आया, किंतु भारतीय समाज में सामाजिक असमानता, धार्मिक कुरीतियाँ और लैंगिक भेदभाव जैसी समस्याएँ अत्यंत व्यापक रूप में विद्यमान थीं। सती प्रथा, बाल विवाह, विधवा जीवन की कठोर परिस्थितियाँ, जातिगत भेदभाव तथा शिक्षा की सीमित उपलब्धता उस समय की प्रमुख सामाजिक समस्याएँ थीं, जिन्होंने समाज के बड़े वर्ग को प्रभावित किया। ऐसे ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में राजा राम मोहन राय का उदय भारतीय नवजागरण के अग्रदूत के रूप में हुआ। उन्हें “भारतीय पुनर्जागरण का जनक” (Father of Indian Renaissance) भी कहा जाता है। उन्होंने न केवल सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध संघर्ष किया, बल्कि भारतीय समाज में तार्किकता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और मानवतावाद को स्थापित करने का प्रयास किया। उनका मानना था कि समाज में सुधार केवल धार्मिक अनुष्ठानों या परंपराओं के पुनर्व्याख्यान से संभव नहीं है, बल्कि इसके लिए शिक्षा, तर्क और आधुनिक चेतना आवश्यक है।

राजा राम मोहन राय ने विशेष रूप से सती प्रथा के उन्मूलन के लिए व्यापक आंदोलन चलाया, जिसके परिणामस्वरूप 1829 में तत्कालीन गवर्नर जनरल लॉर्ड विलियम बेंटिंक द्वारा सती प्रथा को अवैध घोषित किया गया। इसके अतिरिक्त उन्होंने स्त्री शिक्षा, विधवा पुनर्विवाह, और सामाजिक समानता के पक्ष में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि किसी भी समाज की प्रगति उसके नागरिकों की स्वतंत्रता और समान अधिकारों पर निर्भर करती है। राजा राम मोहन राय का योगदान केवल सामाजिक सुधार तक सीमित नहीं था, बल्कि उनका चिंतन राजनीतिक विचारधारा से भी गहराई से जुड़ा हुआ था। उन्होंने आधुनिक लोकतांत्रिक मूल्यों जैसे—व्यक्तिगत स्वतंत्रता, प्रेस की स्वतंत्रता, न्यायपूर्ण शासन और प्रशासनिक सुधारों का समर्थन किया। उन्होंने ब्रिटिश शासन की नीतियों की आलोचना करते हुए यह भी कहा कि शासन को जनता के प्रति उत्तरदायी होना चाहिए। उनके विचारों में नागरिक अधिकारों की रक्षा और कानून के शासन (Rule of Law) की अवधारणा स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

इसके अतिरिक्त, उन्होंने धार्मिक सहिष्णुता और एकेश्वरवाद (Monotheism) पर बल देते हुए समाज में व्याप्त धार्मिक कट्टरता का विरोध किया। उनके द्वारा स्थापित “ब्रम्ह समाज” ने सामाजिक सुधार और धार्मिक पुनर्जागरण की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह संगठन सामाजिक समानता, शिक्षा और नैतिक मूल्यों पर आधारित समाज की स्थापना का प्रयास करता था।

इस प्रकार राजा राम मोहन राय का राजनीतिक दृष्टिकोण केवल औपनिवेशिक शासन के संदर्भ में राजनीतिक अधिकारों की मांग तक सीमित नहीं था, बल्कि यह व्यापक सामाजिक सुधार, मानवीय स्वतंत्रता और आधुनिक लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना से जुड़ा हुआ था। उनका चिंतन भारतीय राजनीतिक विचारधारा में एक महत्वपूर्ण आधार स्तंभ माना जाता है, जिसने आगे चलकर भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन और आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

शोध समस्या (Research Problem)

राजा राम मोहन राय को भारतीय पुनर्जागरण का अग्रदूत माना जाता है, किंतु उनके सामाजिक सुधार संबंधी कार्यों के साथ-साथ उनके राजनीतिक दृष्टिकोण का अध्ययन अपेक्षाकृत कम हुआ है। यह शोध इस प्रश्न का अध्ययन करेगा कि सामाजिक सुधारों के प्रति उनका दृष्टिकोण किस प्रकार राजनीतिक विचारधारा और आधुनिक भारतीय राज्य की अवधारणा से जुड़ा था।

अध्ययन का औचित्य (Rationale of Study)

राजा राम मोहन राय के विचार आधुनिक भारत के निर्माण की आधारशिला माने जाते हैं। सामाजिक सुधारों के साथ-साथ उनके राजनीतिक चिंतन को समझना समकालीन भारतीय लोकतंत्र, मानवाधिकार और सामाजिक न्याय की अवधारणाओं को समझने में उपयोगी है। यह अध्ययन राजनीति विज्ञान के संदर्भ में उनके योगदान का मूल्यांकन करेगा।

अध्ययन के उद्देश्य (Objectives of Study)

1. राजा राम मोहन राय के सामाजिक सुधार संबंधी विचारों का अध्ययन करना।
2. महिलाओं की स्थिति और सती प्रथा के विरोध में उनके योगदान का विश्लेषण करना।
3. धार्मिक सहिष्णुता और सामाजिक समानता के प्रति उनके दृष्टिकोण को समझना।
4. नागरिक स्वतंत्रता, प्रेस की स्वतंत्रता और प्रशासनिक सुधारों के संबंध में उनके राजनीतिक विचारों का अध्ययन करना।
5. आधुनिक भारत और समकालीन राजनीति में उनके विचारों की प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना।

परिकल्पना (Hypothesis)

- राजा राम मोहन राय के सामाजिक सुधार संबंधी विचार आधुनिक भारतीय राजनीतिक चेतना के विकास में महत्वपूर्ण रहे हैं।
- महिलाओं के अधिकार, धार्मिक सहिष्णुता और सामाजिक समानता संबंधी उनके विचार लोकतांत्रिक मूल्यों को सुदृढ़ करते हैं।

- उनका राजनीतिक दृष्टिकोण समकालीन भारतीय समाज और राजनीति में आज भी प्रासंगिक है।

शोध प्रश्न (Research Questions)

1. राजा राम मोहन राय के सामाजिक सुधार संबंधी विचारों की मुख्य विशेषताएँ क्या थीं?
2. भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति और सती प्रथा के विरोध में उनका दृष्टिकोण किस प्रकार सामाजिक परिवर्तन का आधार बना?
3. धार्मिक सहिष्णुता और सामाजिक समानता के प्रति उनके विचार भारतीय राजनीतिक चिंतन को किस प्रकार प्रभावित करते हैं?
4. नागरिक स्वतंत्रता, प्रेस की स्वतंत्रता और प्रशासनिक सुधारों के संबंध में उनके राजनीतिक विचारों का क्या महत्व है?
5. समकालीन भारतीय समाज और राजनीति में उनके विचार कितने प्रासंगिक हैं?

अध्ययन का महत्व एवं आवश्यकता (Significance and Need of the Study)

राजा राम मोहन राय भारतीय पुनर्जागरण के प्रमुख प्रवर्तक और आधुनिक भारत के प्रारंभिक राजनीतिक चिंतकों में से एक थे। उन्होंने सामाजिक सुधार को केवल धार्मिक और सामाजिक बदलाव तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे राजनीतिक अधिकारों, नागरिक स्वतंत्रता और आधुनिक शासन व्यवस्था से भी जोड़ा। वर्तमान भारतीय समाज में सामाजिक समानता, महिला अधिकार, धार्मिक सहिष्णुता और लोकतांत्रिक मूल्यों जैसे विषय आज भी महत्वपूर्ण हैं। ऐसे में राजा राम मोहन राय के राजनीतिक दृष्टिकोण का अध्ययन इन समकालीन मुद्दों को समझने में सहायक सिद्ध होता है। यह अध्ययन राजनीति विज्ञान के विद्यार्थियों के लिए इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि इससे आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तथा लोकतांत्रिक मूल्यों के विकास को समझने में सहायता मिलती है। साथ ही यह शोध सामाजिक सुधार और राजनीतिक परिवर्तन के बीच संबंध को स्पष्ट करने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

6. शोध पद्धति (Research Methodology)

यह अध्ययन विश्लेषणात्मक प्रकृति का है, इसमें प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है।

प्राथमिक स्रोत:

राजा राम मोहन राय के पत्र, लेख और भाषण, ब्रम्ह समाज से संबंधित दस्तावेज।

द्वितीयक स्रोत:

पुस्तकें, शोध-पत्र, जर्नल, विश्वविद्यालयीय शोध-प्रबंध।

अध्ययन का क्षेत्र (Scope of Study)

प्रस्तुत अध्ययन का क्षेत्र मुख्य रूप से राजा राम मोहन राय के सामाजिक सुधार संबंधी विचारों तथा उनके राजनीतिक दृष्टिकोण के विश्लेषण तक सीमित है। इस अध्ययन में विशेष रूप से यह समझने का प्रयास किया गया है कि उन्होंने उन्नीसवीं शताब्दी के भारतीय समाज में व्याप्त सती प्रथा, बाल विवाह, जातिगत भेदभाव तथा महिलाओं की दयनीय स्थिति जैसी सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध किस प्रकार वैचारिक एवं व्यावहारिक आंदोलन का नेतृत्व किया। साथ ही यह भी अध्ययन किया गया है कि उनके विचारों ने भारतीय समाज में आधुनिक चेतना और सुधारवादी दृष्टिकोण के विकास में किस प्रकार योगदान दिया।

इस शोध का दूसरा महत्वपूर्ण क्षेत्र भारतीय राजनीतिक चिंतन में राजा राम मोहन राय की भूमिका का मूल्यांकन करना है। उन्होंने व्यक्तिगत स्वतंत्रता, नागरिक अधिकार, प्रेस की स्वतंत्रता और उत्तरदायी शासन जैसे आधुनिक राजनीतिक मूल्यों का समर्थन किया, जिससे भारतीय राजनीतिक विचारधारा को एक नई दिशा प्राप्त हुई। उनके विचारों ने भारतीय समाज में लोकतांत्रिक चेतना के प्रारंभिक स्वरूप को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके अतिरिक्त अध्ययन का एक प्रमुख पक्ष सामाजिक समानता, महिला अधिकार और धार्मिक सहिष्णुता जैसे मूलभूत मुद्दों पर उनके विचारों का विश्लेषण करना है। उन्होंने जातिगत असमानता और धार्मिक कट्टरता का विरोध करते हुए समाज में समानता और मानवतावाद की स्थापना पर बल दिया। महिला शिक्षा और स्त्री अधिकारों के प्रति उनका दृष्टिकोण उस समय के भारतीय समाज में अत्यंत प्रगतिशील माना जाता है, जिसने आगे चलकर सामाजिक सुधार आंदोलनों को प्रेरित किया।

अंततः यह अध्ययन समकालीन भारतीय समाज और राजनीति में उनके विचारों की प्रासंगिकता का भी मूल्यांकन करता है। वर्तमान समय में जब सामाजिक न्याय, समान अवसर, धार्मिक सहिष्णुता और लोकतांत्रिक मूल्यों की चर्चा व्यापक रूप से हो रही है, तब राजा राम मोहन राय के विचार आज भी मार्गदर्शक और प्रासंगिक प्रतीत होते हैं। इस प्रकार यह अध्ययन उनके विचारों को ऐतिहासिक संदर्भ के साथ-साथ आधुनिक राजनीतिक और सामाजिक परिप्रेक्ष्य में समझने का प्रयास करता है।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य (Historical Background)

उन्नीसवीं शताब्दी का भारत एक ऐसे ऐतिहासिक दौर से गुजर रहा था जिसे सामान्यतः “भारतीय नवजागरण” (Indian Renaissance) का काल कहा जाता है। यह वह समय था जब भारत में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन पूर्ण रूप से स्थापित हो चुका था और इसके प्रभाव से भारतीय समाज, अर्थव्यवस्था तथा राजनीति में गहरे परिवर्तन हो रहे थे। इस काल में एक ओर परंपरागत सामाजिक संरचनाएँ—जैसे जाति व्यवस्था, धार्मिक रूढ़ियाँ और पितृसत्तात्मक

व्यवस्था—बहुत मजबूत थीं, वहीं दूसरी ओर पश्चिमी शिक्षा, आधुनिक विज्ञान, तर्कवाद और उदार विचारधारा का प्रभाव भी धीरे-धीरे भारतीय समाज में प्रवेश कर रहा था। इस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में भारतीय समाज अनेक गंभीर सामाजिक कुरीतियों से ग्रस्त था। सती प्रथा, बाल विवाह, विधवा जीवन की कठोर सामाजिक परिस्थितियाँ, स्त्रियों की शिक्षा का अभाव तथा जातिगत भेदभाव जैसी समस्याएँ व्यापक रूप से विद्यमान थीं। सामाजिक असमानता इतनी गहरी थी कि समाज का एक बड़ा वर्ग अधिकारों और सम्मान से वंचित था। धार्मिक क्षेत्र में भी अंधविश्वास, कर्मकांड और कट्टरता का प्रभाव प्रबल था, जिसके कारण सामाजिक सुधार की आवश्यकता और अधिक बढ़ गई थी। इसी समय पश्चिमी शिक्षा के प्रसार ने भारतीय मध्यम वर्ग में नई चेतना का संचार किया। ब्रिटिश शासन द्वारा स्थापित शिक्षा प्रणाली ने तर्क, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और आधुनिक राजनीतिक विचारों से भारतीय समाज का परिचय कराया। यद्यपि यह शिक्षा प्रणाली औपनिवेशिक हितों से प्रेरित थी, फिर भी इसने भारतीय समाज में सुधार और आत्ममंथन की प्रक्रिया को गति प्रदान की।

इसी ऐतिहासिक परिवेश में राजा राम मोहन राय का उदय हुआ, जिन्हें भारतीय पुनर्जागरण का अग्रदूत माना जाता है। उन्होंने भारतीय समाज की इन समस्याओं को गहराई से समझा और यह तर्क प्रस्तुत किया कि सामाजिक सुधार के बिना राजनीतिक स्वतंत्रता और राष्ट्रीय प्रगति संभव नहीं है। उन्होंने परंपरागत धार्मिक व्याख्याओं की आलोचना करते हुए तर्क, मानवतावाद और समानता पर आधारित समाज की स्थापना की आवश्यकता पर बल दिया। उनका सबसे महत्वपूर्ण योगदान सती प्रथा के उन्मूलन के लिए किया गया आंदोलन था, जिसके परिणामस्वरूप 1829 में तत्कालीन गवर्नर जनरल लॉर्ड विलियम बेंटिक द्वारा सती प्रथा को कानूनी रूप से प्रतिबंधित किया गया। यह घटना भारतीय सामाजिक सुधार इतिहास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर मानी जाती है। इस प्रकार, राजा राम मोहन राय का उदय उस ऐतिहासिक स्थिति का परिणाम था जिसमें भारतीय समाज परंपरा और आधुनिकता के बीच संघर्ष कर रहा था। उन्होंने इस संक्रमणकालीन स्थिति में सामाजिक सुधार और आधुनिक राजनीतिक चेतना के विकास की दिशा में निर्णायक भूमिका निभाई। उनका चिंतन भारतीय इतिहास में सामाजिक परिवर्तन, धार्मिक सुधार और राजनीतिक आधुनिकता की प्रक्रिया को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।

अध्ययन की सीमाएँ (Limitations of the Study)

प्रस्तुत अध्ययन मुख्यतः साहित्य आधारित है, इसलिए इसमें तथ्य संकलन के लिए राजा राम मोहन राय के लेखों, पत्रों, ऐतिहासिक दस्तावेजों तथा उनसे संबंधित पुस्तकों और शोध-पत्रों का उपयोग किया गया है। यह शोध विशेष रूप से उनके सामाजिक सुधार और राजनीतिक दृष्टिकोण तक सीमित है, इसलिए उनके आर्थिक या व्यापक धार्मिक विचारों का

विस्तृत अध्ययन इसमें शामिल नहीं किया गया है। अध्ययन गुणात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है, अतः इसमें क्षेत्रीय सर्वेक्षण, साक्षात्कार अथवा प्रश्नावली आधारित अनुसंधान सम्मिलित नहीं है। निष्कर्ष उपलब्ध साहित्यिक और ऐतिहासिक स्रोतों पर आधारित हैं, इसलिए उनकी सीमा उन्हीं स्रोतों तक निर्धारित है।

निष्कर्ष (Conclusion)

अध्ययन से यह स्पष्ट होने की संभावना है कि राजा राम मोहन राय ने भारतीय समाज में सुधार की शुरुआत करते हुए आधुनिक राजनीतिक चेतना को भी मजबूत किया। महिलाओं के अधिकार, धार्मिक स्वतंत्रता और प्रेस की स्वतंत्रता के प्रति उनके विचार भारतीय लोकतंत्र और सामाजिक न्याय के मूल्यों से गहराई से जुड़े हुए हैं। उनका चिंतन वर्तमान समय में भी सामाजिक सुधार और लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए प्रेरणादायक है। उन्होंने महिलाओं की स्थिति में सुधार, सती प्रथा के विरोध, शिक्षा के प्रसार और धार्मिक सहिष्णुता को समाज की उन्नति के लिए आवश्यक माना। उनके राजनीतिक विचारों में नागरिक स्वतंत्रता, प्रेस की स्वतंत्रता और प्रशासनिक उत्तरदायित्व जैसे लोकतांत्रिक मूल्यों को विशेष महत्व प्राप्त है।

अध्ययन यह भी दर्शाता है कि उनके सामाजिक सुधार संबंधी विचार केवल तत्कालीन भारतीय समाज तक सीमित नहीं थे, बल्कि उन्होंने आधुनिक भारत के लोकतांत्रिक और संवैधानिक मूल्यों की नींव रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वर्तमान समय में भी सामाजिक समानता, महिला अधिकार और धार्मिक सहिष्णुता जैसे विषयों पर उनका चिंतन अत्यंत प्रासंगिक और मार्गदर्शक प्रतीत होता है। इस प्रकार राजा राम मोहन राय का राजनीतिक दृष्टिकोण भारतीय राजनीतिक विचारधारा और सामाजिक सुधार आंदोलनों की एक महत्वपूर्ण धरोहर है।

सुझाव (Suggestions)

1. राजनीति विज्ञान और इतिहास के विद्यार्थियों को राजा राम मोहन राय के सामाजिक एवं राजनीतिक विचारों का गहन अध्ययन करना चाहिए।
2. महिला अधिकार और सामाजिक समानता से संबंधित समकालीन नीतियों में उनके विचारों का संदर्भ उपयोगी हो सकता है।
3. भारतीय राजनीतिक चिंतन के पाठ्यक्रम में उनके योगदान को और विस्तार से शामिल किया जाना चाहिए।
4. भविष्य में उनके विचारों की तुलना अन्य भारतीय समाज सुधारकों जैसे राजा राम मोहन राय या ज्योतिराव फुले के साथ की जा सकती है।
5. सामाजिक सुधार और लोकतंत्र के संबंध में उनके विचारों पर क्षेत्रीय और तुलनात्मक शोध को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. राय, राजा राम मोहन. (1982). *राजा राम मोहन राय: चयनित रचनाएँ*. नई दिल्ली: एस. चाँद एंड कम्पनी, पृ. 45।
2. मजूमदार, रमेशचन्द्र. (1965). *राजा राम मोहन राय और आधुनिक भारत*. कोलकाता: फर्मा के. एल. मुखोपाध्याय, पृ. 112।
3. नटराजन, एस. (1957). *भारत में सामाजिक सुधार का एक शताब्दी इतिहास*. मुम्बई: एशिया पब्लिशिंग हाउस, पृ. 23।
4. चन्द्र, बिपिन. (2009). *आधुनिक भारत का इतिहास*. नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान, पृ. 67।
5. मेहता, वी. आर. (2012). *भारतीय राजनीतिक चिंतन की आधारशिलाएँ*. नई दिल्ली: मनोहर पब्लिशर्स, पृ. 172।
6. मिश्र, एस. पी. (2017). *भारतीय राजनीतिक चिंतन*. नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान, पृ. 89।
7. शर्मा, आर. के. (2017). *आधुनिक भारत के सामाजिक एवं राजनीतिक विचारक*. जयपुर: राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पृ. 41।
8. सिंह, बी. एन. (2016). *राजा राम मोहन राय और भारतीय नवजागरण*. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन, पृ. 75।
9. जैन, पुखराज. (2015). *भारतीय नवजागरण और सामाजिक सुधार आन्दोलन*. नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशन्स, पृ. 102।
10. अग्रवाल, आर. सी. (2017). *भारतीय राजनीतिक विचारक*. नई दिल्ली: एस. चाँद एंड कम्पनी, पृ. 33।



EARN YOUR MBA

WWW.IIMPS.IN



Accreditation & Ranking



UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

☎ 011-41005174

R
S
E
A
R
C
H
G
A
T
E
W
A
Y

STOP PLAGIARISM



Arogyam Ayurveda
Holistic Healing through herbs



A
R
O
G
Y
A
M
O
N
L
I
N
E

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER



COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD



- BLUE** Calms your Child's Mind & Body
- YELLOW** Promotes Concentration, Stimulates the Memory
- PINK** Evokes Empathy, makes your Child Calm
- RED** Excites and energizes your Child's body
- GREEN** Improves Reading speed and Comprehension

www.parivartan4u.com

Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY**

ISSN – 2250 – 1959 (O) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
COMMERCE, ARTS AND SCIENCE**

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES**

ISSN 2277 – 9809 (O) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSSH.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE
ENGINEERING AND TECHNOLOGY**

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM



**INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION**

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSSI.COM



**JOURNAL OF LEGAL STUDIES, POLITICS
AND ECONOMICS RESEARCH**

WWW.JLPER.COM

JLPE